मेरी प्यारी माँ

मां तुम ममता की मुरत हो

निश्छल प्रेम की सूरत हो।

तुम मेरा हर दुःख सहती हो,

मेरा हर काम करती हो।

मां तुम कितनी अच्छी हो।

जब मैं रोती हूँ

तुम भी आंसू बहाती हो

चोट मुझे जब लगती है

तुम ही दवा लगाती हो।

प्यार तुम्हारा सच्चा है,

सबका प्यार झूठा है।

मां तुम कितनी अच्छी हो।

बिदिशा मुखर्जी

१२७ (फ.फ.), आई.पी. कालोनी

फरीदाबाद